9 वर्षा बहार

वर्षा बहार सबके, मन को लुभा रही है
नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।

बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं
पानी बरस रहा है, झरने भी बह रहे हैं।

चलती हवा है ठण्डी, हिलती हैं डालियाँ सब
बागों में गीत सुन्दर, गाती है मालिनें अब।

तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते,
फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते।

करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे,
मेढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।

खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है,
बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।

चलते कतार बाँधे, देखो ये हंस सुन्दर,
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।

इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर,
सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।

–मुकुटधर पाण्डेय

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED
BSTBPC

शब्दार्थ

अनूठी- अनोखी **आमोद**- खुशी **अति**- बहुत **लखो**- देखो

भू- भूमि, धरती **सौरभ**- सुगंध **मनहर**-मन को हरने वाले

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. प्रस्तुत कविता के आधार पर वर्षा ऋतु का वर्णन कीजिए।
2. वर्षा ऋतु में बाग-बगीचों में आनंद क्यों छा जाता है?
3. **निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-**

(क) खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है।

(ख) गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।

पाठ से आगे

1. अपने अनुभव के आधार पर वर्षा ऋतु का वर्णन कीजिए।
2. ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा ऋतु आती है। वर्षा ऋतु के आने पर आप कैसा महसूस करते हैं?
3. वर्षा के जल से क्या-क्या लाभ है?
4. वर्षा के जल को किन-किन तरीकों से संरक्षित किया जा सकता है?
5. यहाँ कविता की प्रथम पंक्ति दी गई है। इसके आधार पर अन्य तीन पंक्तियों की रचना स्वयं कीजिए-

बादल बरसे, नाचे मोर

....

....

....

व्याकरण

1. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए-**

सुख, प्रसन्न, सुन्दर, ठण्डी

गतिविधि

1. वर्षा ऋतु में आपके घर एवं गाँव की स्थिति कैसी हो जाती है? अपने अनुभवों के आधार पर लिखिए।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

10 कुंभा का आत्मबलिदान

आज़ादी किसे प्रिय नहीं होती? मनुष्यों की तो बात ही क्या, पशु-पक्षी भी पराधीन रहना पसंद नहीं करते। लेकिन कभी-कभी इस प्रिय आज़ादी की रक्षा के लिए प्राण भी न्यौछावर करने पड़ते हैं।

राजपूतों की छोटी-सी रियासत बूँदी। वहाँ के वासी थे आज़ादी के परवाने, हाड़ा जाति के राजपूत। परम वीर, नितांत स्वाभिमानी। अपनी मातृभूमि की आन-बान के लिए हरदम मर-मिटने को तैयार।

लेकिन शीघ्र ही उनकी वीरता की परीक्षा की घड़ी आ पहुँची। चित्तौड़ के महाराणा ने बूँदी को अपनी प्रचंड सैन्य शक्ति के बल पर अपने अधीन करना चाहा। बूँदी के हाड़ा राजपूतों ने डटकर युद्ध किया। राणा को इस युद्ध में मुँह की खानी पड़ी।

बूँदी की छोटी-सी रियासत के उन जाँबाज़ राजपूतों ने चित्तौड़ के शक्तिशाली राणा को धूल चटा दी। इस अपमानजनक पराजय से राणा तिलमिला उठे। वे क्रोध से आग-बबूला होकर प्रतिज्ञा कर बैठे, “जब तक बूँदी पर अपना झंडा नहीं फहरा दूँगा, तब तक एक बूँद पानी भी नहीं पीऊँगा।”

बूँदी छोटा-सा राज्य सही, पर उसे चुटकियाँ बजाते तो जीता नहीं जा सकता था। जल्दबाजी में बिना पूरी तैयारी किए युद्ध करने पर चित्तौड़ को फिर पराजय का मुँह देखना पड़ता। पूरी तैयारी और युद्ध में काफी समय लगने की संभावना थी।

ऐसी स्थिति में राणा की प्रतिज्ञा का क्या हो? राणा अपनी प्रतिज्ञा से तिल भर भी डिगने को तैयार न थे। सोच-विचार के बाद एक मंत्री को यह उपाय सूझा कि बूँदी का एक नकली किला बनाया जाए और राणा उसे जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करें। फिर अन्न-जल ग्रहण कर लें। बाद में भली-भाँति तैयारी करके बूँदी का असली किला जीता जाए।

यह उपाय सबको पसंद आया। फिर तो तुरंत एक मैदान में बूँदी का नकली किला बनाया जाने लगा। तभी चित्तौड़ की सेना का एक हाड़ा सैनिक जंगल से शिकार खेलकर लौटा। किला बनते

देखकर वह ठिठक गया। ध्यान से देखकर बोला, "अहा! कितनी सुन्दर कारीगरी है! ठीक वैसा ही द्वार, वैसा ही परकोटा, वैसे ही बुर्ज! बूँदी के किले की हूबहू नकल की गई है। मेरी मातृभूमि बूँदी, तुझे प्रणाम है।" यह कहकर उसने उस किले के सामने अत्यंत सम्मान से सिर झुका दिया।

लेकिन सैनिक का कौतूहल शांत नहीं हुआ। उसके मन में एक प्रश्न घूमता रहा, 'आखिर बूँदी का यह नकली किला यहाँ क्यों बनाया जा रहा है?'

वह अपना कौतूहल मिटाने के लिए कारीगरों के पास पहुँचा। उन्होंने उसे सब बातें कह सुनाईं। बातें सुनते ही उस सैनिक की पेशानी पर बल पड़ गए। वह विद्युतगति से वहाँ से निकल आया। दृढ़ निश्चय से उसकी मुट्ठियाँ कस गईं। आँखें लाल हो गईं । बाँहे फड़कने लगीं। उसका ओजस्वी स्वर फूट पड़ा, " यह नहीं हो सकता। मेरी प्यारी मातृभूमि बूँदी, जब तक तेरा यह बेटा जीवित है, तब तक तेरा यह अपमान कदापि नहीं हो सकता। मैं रक्त की आखिरी बूँद शेष रहने तक अपनी मातृभूमि की रक्षा करूँगा।"

जानते हैं, कौन था यह सैनिक? यह था वीर हाड़ा राजपूत कुंभा। इसकी मातृभूमि थी बूँदी, पर यह बहुत समय से चित्तौड़ के राणा की सेना में नौकरी करता था। बूँदी के कुछ और हाड़ा राजपूत भी राणा की सेना में सैनिक थे। सभी परम स्वामिभक्त, परम वीर।

ये सभी राणा के लिए हरदम मरने-मिटने को तैयार थे, पर अपनी मातृभूमि बूँदी को अपमानित करने का यह नाटक इनके लिए अत्यंत असह्य था। सब चित्तौड़वासी इन हाड़ा राजपूतों की इस नाराजगी से बेखबर थे।

योजनानुसार राणा दूसरे दिन बूँदी के नकली किले को जीतने के लिए सेना लेकर चल पड़े। एकदम निश्चित जीत के बारे में पूरी तरह आश्वस्त, क्योंकि वास्तविक युद्ध नहीं, युद्ध का नाटक ही तो होना था। राणा के वहाँ पहुँचने पर हल्का-फुल्का प्रतिरोध करने के बाद बूँदी के नकली सैनिकों को हथियार डाल देने थे।

लेकिन यह क्या! नकली किले में घुसने से पहले ही राणा को तीरों की जोरदार बौछार का सामना करना पड़ा। तीर ठीक लक्ष्य साधकर छोड़े जा रहे थे। राणा ने बड़ी मुश्किल से अपने को बचाया। यह सब कुछ अप्रत्याशित था। कोई नहीं जान पाया कि यह कैसे हुआ?

अब राणा का सेनापति यह जानने के लिए आगे बढ़ा कि माज़रा क्या है? तभी अंदर से हाड़ा राजपूत वीर कुंभा का सिंह गर्जन सुनाई पड़ा, "सेनापति जी, ख़बरदार! पीछे हटिए। हमारे जीते जी आप बूँदी के किले में पैर नहीं रख पाएँगे। अंदर आने के लिए आपको बूँदी के वीरों की लाशों पर से गुजरना होगा।"

"अच्छा! कुंभा यह तुम हो! अरे भाई! यह बूँदी नहीं है। यह तो राणा की प्रतिज्ञा पूरी कराने के लिए बनाया गया नकली किला है। बात समझो और एक तरफ हट जाओ।"

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

"सेनापति जी! मातृभूमि तो मातृभूमि होती है। वीर अपने प्राण देकर भी उसकी रक्षा करते हैं। मातृभूमि नकली भी होती है, यह मैं आपसे ही सुन रहा हूँ। हमने राणा का नमक खाया है। हम उनके सेवक हैं। उनके लिए प्राण तक दे सकते हैं। पर किसी के भी हाथों इस तरह अपनी मातृभूमि बूँदी का अपमान कदापि सहन नहीं करेंगे।"

सभी लोगों ने लाख समझाया, लेकिन बूँदी के नकली किले में मोर्चाबंदी करके डटे हुए उन मुट्ठी भर हाड़ा राजपूतों में से कोई तिल भर भी डिगने या झुकने को तैयार नहीं हुआ।

और अंत में युद्ध हुआ। एक बेमेल मुकाबला। एक ओर चित्तौड़ के राणा के हज़ारों सैनिक और दूसरी ओर हाड़ा कुंभा के नेतृत्व में लड़ने वाले बीस-पच्चीस देशभक्तों की छोटी-सी टोली, जो बूँदी के उस नकली किले में मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना लिए हुए उसकी रक्षा करती हुई मर मिटी।

जब तक एक भी हाड़ा राजपूत जिंदा रहा, चित्तौड़ का एक भी सिपाही बूँदी के उस नकली किले में प्रवेश नहीं कर पाया।

कहानी का अंत हो गया। राणा जीता, कुंभा और उसकी और टोली हार गई।

पर क्या सचमुच ऐसा ही हुआ? नहीं! लगता ऐसा है, जैसे राणा जीतकर भी हार गया और कुंभा अपनी मातृभूमि की आन-बान के लिए मरकर भी युद्ध में जीत गया।

सचमुच कोई-कोई जीत, हार से भी बदतर होती है और कोई हार जीत से भी अधिक शानदार। क्या कुंभा की हार तथा उसका आत्मबलिदान किसी शानदार जीत से भी अधिक गौरवपूर्ण नहीं है?

शब्दार्थ

पराधीन–गुलाम	**आज़ादी के परवाने**–आज़ादी के लिए संघर्ष करने वाले
प्राण–जान	**अधीन**= वश में, क़ब्ज़े में
जाँबाज़=जान की बाजी लगाने वाला	**धूल चटा दी**–हरा दिया
पराजय–हार	**तिलमिला उठा**–बेचैन हो गया
आग-बबूला होना–बहुत क्रोधित होना	**चुटकियाँ बजाते**–बहुत आसानी से
संभावना–आशा, उम्मीद	**तिलभर न डिगना**–थोड़ा भी न हटना
ठिठकना–थोड़ी देर के लिए रुकना	**परकोटा**=गढ़ की रक्षा के लिए निर्मित ऊँची चहारदीवारी
पेशानी–माथा, मस्तक	**विद्युतगति**–बिजली जैसी (तेज़) चाल से
असह्य–न सहने योग्य।	**वास्तविक**–असली
प्रतिरोध–विरोध, मुकाबला	**अप्रत्याशित**–जिसकी आशा न हो
बदतर–अत्यधिक खराब	**गौरवपूर्ण**–सम्मान से युक्त, महत्त्वपूर्ण

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. दिए गए शब्दों को रिक्त स्थानों में भरिए-

बूँदी, चित्तौड़, नकली, सैनिक, मंत्री

(क) राणा .... का रहने वाला था।

(ख) बूँदी का .... किला बनाया जाने लगा।

(ग) कुछ हाड़ा राजपूत राणा की सेना में .... थे।

(घ) .... ने सुझाव दिया कि बूँदी का एक नकली किला बनाया जाए।

(ङ) वीर कुंभा .... का सपूत था।

2. हाड़ा राजपूतों की राणा से नाराजगी का क्या कारण था?
3. अपनी हार से क्रोधित हुए राणा ने अचानक क्या प्रतिज्ञा कर डाली?
4. राणा की प्रतिज्ञा तुरंत पूरी किए जाने में क्या कठिनाई थी?
5. बूँदी का नकली किला क्यों बनाया गया?
6. प्रस्तुत पाठ से कुंभा के किन-किन गुणों का पता चलता है?

पाठ से आगे

1. कुंभा की हार, राणा की जीत से शानदार थी। कैसे?
2. आप अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए क्या-क्या कर सकते हैं?
3. हाड़ा कुंभा की किस बात ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया ओर क्यों?
4. अगर आपकी जमीन पर कोई बल पूर्वक एवं छलपूर्वक कब्जा करना चाहे तो इस समस्या का समाधान आप कैसे करेंगे?

व्याकरण

1. पाठ में प्रयुक्त जातिवाचक एवं व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को छाँटकर लिखिए।
2. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए**

धूल चटाना, आग बबूला होना, आँखें लाल होना, लाशों पर से गुजरना, मुँह की खाना।

© BSTBPC
WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

गतिविधि

1. बॉक्स में दी गई कहानी को वार्तालाप के रूप में लिखिए।

ज़ेन बातचीत

ज़ेन गुरु अपने शिष्यों को सिखाते हैं कि वे अपने आप को व्यक्त कैसे करें। दो मठ ऐसे थे जिनमें एक-एक बालक भी रहता था। हर सुबह एक मठ का नन्हा शिष्य जब सब्ज़ी खरीदने जाया करता तो उसकी मुलाकात दूसरे मठ के शिष्य से होती, जो अपने किसी काम से जा रहा होता था।

एक दिन दूसरे वाले शिष्य ने पहले से पूछा, " तुम कहाँ जा रहे हो?"

"जहाँ मेरे पाँव मुझे ले जाएँगे।" पहला बोला। इस उत्तर से पहला शिष्य चकरा गया। वह अपने गुरु से मदद माँगने गया। गुरु ने कहा, "कल सुबह जब तुम उस लड़के से मिलोगे तो उससे फिर यही सवाल पूछना। वह तुम्हें वही जवाब देगा तो तुम पूछना 'अगर तुम्हारे पाँव न होते, तब तुम कहाँ जाते भला?' अच्छा सबक मिलेगा उसे।"

अगले दिन फिर बच्चों की मुलाकात हो गई। "कहाँ जा रहे हो तुम?" दूसरे शिष्य ने पूछा।

"जहाँ हवा जाएगी, वहीं।"

नन्हा शिष्य एक बार फिर चकरा गया, अपनी हार मानकर फिर वह गुरु के पास गया।

गुरु ने सुझाव दिया, " उससे पूछना अगर हवा न चले तो तुम कहाँ जाओगे?"

अगले दिन बच्चे तीसरी बार एक दूसरे से टकराए। दूसरे ने पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?" "मैं सब्ज़ी खरीदने बाज़ार जा रहा हूँ।" पहले ने जवाब दिया।

साभार: चकमक, बाल विज्ञान पत्रिका, नवंबर, 2009

© BSTBPC, WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

11 कबीर के दोहे

काल्ह करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब॥

साँईं इतना दीजिए, जामे कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय॥

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन साबुन पानी बिना, निरमल करे सुभाय॥

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

सोना, सज्जन, साधुजन, टूटि जुरै सौ बार।
दुर्जन, कुंभ-कुम्हार कै, एकै धका दरार॥

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय॥

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जो दिल खोजा आपनो, मुझ सा बुरा न कोय॥

– कबीर

शब्दार्थ

बहुरि – दुबारा	**साँईं** – ईश्वर, भगवान
कुटुम – सगा-संबंधी	**नियरे** – पास, निकट
आखर–अक्षर	**मुआ**–मर गया
निन्दक–निन्दा करने वाला	**म्यान**–तलवार रखने का खोल

WEBCOPY ©BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पठित पाठ के आधार पर निम्नांकित कथनों पर सही (⌧) या गलत (×) का निशान लगाइए

(क) प्रेम की भाषा बोलने वाला ही पंडित होता है।

(ख) निन्दा करने वालों को दूर रखना चाहिए।

(ग) कोई भी बात सोच-समझकर बोलनी चाहिए।

(घ) सज्जन व्यक्ति टुटता-जुड़ता रहता है जबकि दुर्जन व्यक्ति टुटता है तो जुड़ता नहीं।

2. पठित पाठ में कौन-सा दोहा आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों?

3. कबीर के उस दोहे का उल्लेख कीजिए, जिसमें सज्जन, साधुजन और सोने की तुलना की गयी है।

पाठ से आगे

1. "कबीर के दोहे जीवनोपयोगी एवं व्यावहारिक शिक्षाओं से भरे पड़े हैं।" पाठ के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

2. कबीर के दोहे का अध्ययन करने के पश्चात् उनके व्यक्तित्व के बारे में कल्पना कीजिए एवं लिखिए।

3. हमें काम को कल के भरोसे क्यों नहीं टालना चाहिए?

व्याकरण

1. निम्नलिखत शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

(क) परले .... (ख) नियर ....

(ग) बहुरि .... (ग) आखर ....

2. कुछ ऐसे शब्दों का संग्रह कीजिए, जिसमें 'जन' लगा हो।

जैसे- दुर्जन, जनतंत्र

3. दोहे की दी गई पंक्तियों को नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार बदलकर लिखिए-

उदाहरण - जाति न पूछो साधु की
- साधु की जाति न पूछो

(क) "मोल करो तलवार का" (ख) "बुरा जो देखन मैं चला"

गतिविधि

1. कबीर की भाँति अन्य कवियों ने भी उपदेशात्मक दोहे लिखे हैं। उनके कुछ दोहों को साफ-साफ बड़े अक्षरों में लिखकर अपनी कक्षा में दीवार पर चिपकाइए।

2. 'कबीर एक समाज सुधारक थे।' इस विषय पर अपने शिक्षक, अभिभावक एवं सहपाठियों से चर्चा कीजिए।

WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED BSTBPC

12 जन्म-बाधा

बबलू ने ही यह लीड फेंकी होगी; झाड़ू लगाते समय उसे खाट के नीचे मिली थी। अभी पूरी तरह खत्म भी नहीं हुई कि फेंक दी! ऐसी ही फिजूल-खर्चियों पर पप्पा नाराज होते हैं।

खैर, जाने दो, अपना तो काम ही बना। कागज और लिफाफा पप्पा के झोले से निकाल ही चुकी हूँ; उनको पता नहीं चला, नहीं तो जरूर पूछते।

अब जल्दी लिख लेना है मुझे। देर करूँगी तो फिर मौका नहीं मिलेगा। अभी माँ की आँख लगी है; कुछ देर तो नहीं ही जगेगी। छोटकी भी माँ का दूध चूसते-चूसते सो गई है। वह अगर जाग गयी तो आफत है; उसे लादे फिरना होगा।

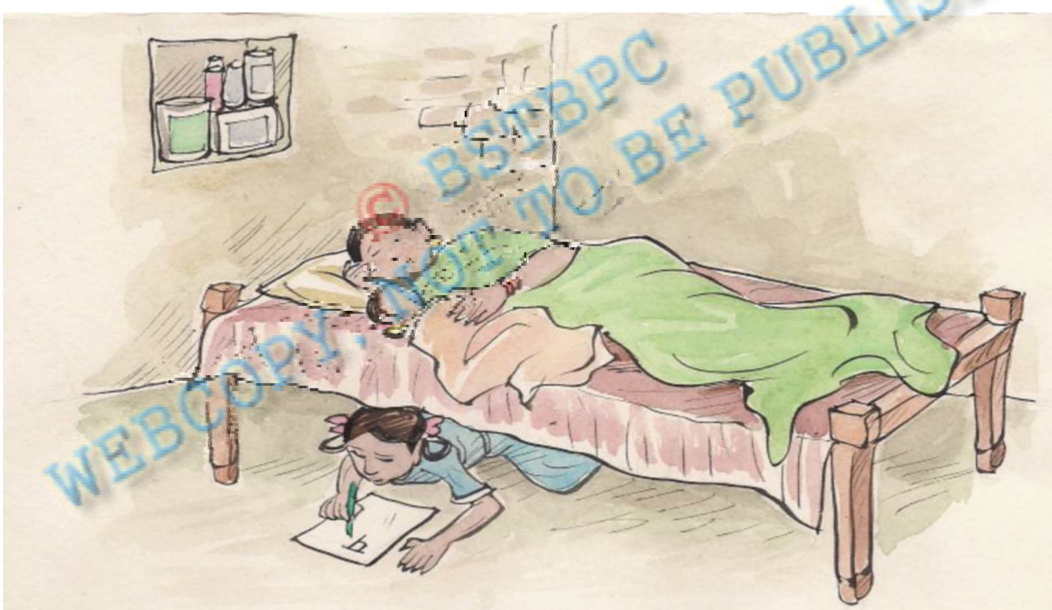
© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

क्या लिखूँ? कैसे शुरू किया जाता है?... अच्छा लिख देती हूँ... प्यारे प्रधान... ऊँह! यह प्यारे-व्यारे क्या लिखना! वह कोई बच्चे थोड़े ही हैं जो! तब ...?

परम प; प में कौन-सा उ लगेगा? बड़ा या छोटा? माँ को जगाकर पूछूँ? उहँ, उसे भी आता होगा? और वह जग गयी तो लिखना ही नहीं होगा। लिख देती हूँ कुछ भी।